बिहार के स्कूलों में ''बैगलेस डे'' के संदर्भ में विद्यालय प्रधान की भूमिका

स्कूल नेतृत्व अकादमी

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार, पटना

बिहार के स्कूलों में ''बैगलेस डे'' के संदर्भ में विद्यालय प्रधान की भूमिका

डॉ० लव कुमार, व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी. बिहार ,पटना

भूमिका :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ,2020 के आधार सिद्धान्त के अनुसार– '' एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह है जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण मौजूद होता है, जहाँ सभी छात्रों को सीखने के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराए जाते हैं और जहाँ सीखने के लिए अच्छे बुनियादी ढाँचे और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हैं। ये सब हासिल करना प्रत्येक शिक्षा संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए। तथापि, साथ ही विभिन्न संस्थानों के बीच और शिक्षा के हर स्तर पर परस्पर सहज जुड़ाव और समन्वय आवश्यक है।

इस आधार सिद्धान्त को ध्यान में रखकर भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के जन्मदिन शिक्षा दिवस के शुभ अवसर पर बिहार राज्य के तमाम प्रारंभिक विद्यालयों के लिए '' बैगलेस सुरक्षित शनिवार'' कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। यह कार्यक्रम ज्ञान की धरती बिहार में पटना स्थित श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल के सभागाार में आयोजित की गई, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री,बिहार श्री नीतीश कुमार जी उपस्थित रहे।

बैगलेस सुरक्षित शनिवार के सफल कार्यान्वयन में विद्यालय प्रधान की भूमिका अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि कहा जाता है कि जैसा विद्यालय प्रधान होगा, वैसा ही विद्यालय होगा।

उद्देश्यः

प्रस्तुत मॉड्यूल के अध्ययन के पश्चात् विद्यालय प्रधानः–

1. बैगलेस डे की अवधारणा एवं उसके महत्त्व से परिचित हो सकेंगें।

2. बैगलेस डे से संबंधित एक पारदर्शी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने एवं उसके क्रियान्वयन में सफल हो सकेगें।

3. बैगलेस डे के माध्यम से विद्यालय का वातावरण बदलने में समर्थ हो सकेगें।

4. बैगलेस डे के माध्यम से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में नवीन ऊर्जा का संचार करते हुए नवाचार को क्रियान्वित करने में समर्थ हो सकेगें।

5. बैगलेस डे के माध्यम से विद्यार्थियों के अन्दर छिपी हुई क्षमताओं को उजागर करने में समर्थ हो सकेगें।

6. इसके माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मकता, तार्किक सोच, नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य, विविधता और स्थानीय परिवेश के लिए सम्मान, भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहना आदि गुणों को आत्मसात् एवं प्रेरित करने हेतु समर्थ हो सकेगें।

विषयवस्तु :

अब हम यहाँ बैगलेस सुरक्षित शनिवार के बारे में विस्तृत रूप से जानने एवं समझने का प्रयास करेगें। विद्यालयों में बच्चों की दिनचर्या आमतौर पर स्कूल बैग अथवा बस्ते के साथ ही आकार लेती हुई दिखती है, जिसके बारे में आम धारणा है कि उनमें पुस्तकें हैं और उन पुस्तकों में ज्ञान है जो बच्चों को प्राप्त करना है। पर पुस्तक का वह ज्ञान बच्चों के आस–पास की दुनिया से कैसे जुड़ता है, उन्हें कुछ नया अनुभव कैसे देता है, उनकी रूचियों को महत्व कैसे दिया जा सकता है, उनके चाहत का विस्तार कैसे करता है, उनके जिज्ञासाओं को बढ़ाता कैसै है? इन सभी को बैगलेस सुरक्षित शनिवार की गतिविधियों में होते हुए देखा जा सकेगाा।

विद्यालय का परिसर और वर्ग–कक्ष जीवंत रहे, इसकी चिंता राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट रूप से दिखती है, इस दस्तावेज ने विद्यालयों के लिए 'बैगलेस डे' का सुझाव दिया है जो वस्तुतः महात्मा गाँधी की 'नई तालीम' और प्रो. यशपाल के 'बोझ रहित शिक्षा' (Learning without Burden) के विचारों को आगे बढ़ाते दिख रहा है। बच्चों के लिए विद्यालय का यह विशेष दिवस हर सप्ताह का शनिवार होगा, जिस दिन बच्चे तो स्कूल में होंगे, लेकिन उनके कंधे पर बस्ता नहीं होगा। यह दिन 'बैगलेस सुरक्षित शनिवार' के नाम से जाना जाएगा। इस दिन सुरक्षित शनिवार में आपदाओं से बचने के उपाय एवं जानकारियों के साथ पूरी तरह से बच्चों के लिए रोचक गतिविधियों का दिन होगा जो जिज्ञासा, सृजन, नवाचार, तर्क–चिंतन, कला एवं सौंदर्य, खेल–कूद, देश की सांस्कृतिक विरासत एवं धरोहर, योग एवं स्वच्छता आदि को समर्पित होगा।

सरकार द्वारा इस कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन हेतु कुछ अत्यावश्यक सामान्य दिशा निर्देश हैं, जो निम्नरूपेण वर्णित हैः–

- यह कार्यक्रम कक्षा एक से आठवीं तक के छात्र–छात्राओं के लिए अनिवार्य है। यद्यपि 9वीं से 12वीं कक्षा (माध्यमिक) के छात्र स्वेच्छा से इन गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।
- बैगलेस सुरक्षित शनिवार को बच्चे बिना बस्ते के विद्यालय आएंगे। उस दिन वें अपने साथ रंग, कोरे कागज, छोटे खिलौने, बाल पत्रिकाएं, आदि ला सकते हैं।
- बैगलेस सुरक्षित शनिवार के तहत संचालित की जाने वाली **120 गतिविधियों को 12 क्षेत्रों (Domains)** के अंतर्गत विभाजित किया गया है। प्रत्येक महीने के लिए एक–एक क्षेत्र (Domain) आवंटित किया गया है। बैगलेस सुरक्षित शनिवार के लिए वर्ग–शिक्षक को आवंटित क्षेत्र (Domain) में से किसी भी गतिविधि को चुनने की स्वतंत्रता है। यदि शिक्षिका/शिक्षक सूची से बाहर की किसी अन्य गतिविधि को चुनकर रचनात्मक व रोचक बनाना चाहते हैं तो वे ऐसा करने के लिए स्वतंत्र है, बस इतना ध्यान रखना है कि आवंटित क्षेत्र(Domain) का उल्लंघन नहीं हो क्योंकि आवंटित क्षेत्र (Domain) का एक क्रम एवं महत्व है।
- सभी गतिविधियों में बच्चों के साथ सुगमकर्ता के रूप में वर्ग–शिक्षक/शिक्षिका अनिवार्य रूप से शामिल होंगे एवं उनके कार्यों का अवलोकन एवं मूल्यांकन करेंगे। बैगलेस शनिवार की गतिविधियां **समग्र प्रगति पत्रक (Holistic Report Card)** के सह–शैक्षिक भाग का एक अभिन्न अंग होगी।
- बैगलेस सुरक्षित शनिवार की गतिविधियों में प्रमुख गतिविधि '' अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी/बैठक'' (PTM) माह के चौथे शनिवार को आयोजित किया जाना अपेक्षित होगा। वर्ग–शिक्षक बढ़ते क्रम के अनुसार उस शनिवार को किसी एक कक्षा के बच्चों के अभिभावकों के साथ बैठक करेंगे। जो कक्षाएं

उस दिन पीटीएम का हिस्सा नहीं होंगी वहाँ निर्धारित गतिविधियां सामान्य रूप से संचालित होंगी। मार्च एवं अप्रैल माह को छोड़कर बाकी शेष सभी माह के चतुर्थ शनिवार को शिक्षक–अभिभावक बैठक का आयोजन होगा।

- जिस माह में पाँचवा शनिवार आएगा उस शनिवार को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करते हुए पिछले सभी शनिवार में बच्चों द्वारा निर्मित सामग्रियों/गतिविधियों का प्रदर्शन किया जाएगा एवं समीक्षा करते हुए शिक्षकों द्वारा आकलन/मूल्यांकन किया जाएगा।
- वार्षिक परीक्षा को ध्यान में रखते हुए मार्च माह में बैगलेस सुरक्षित शनिवार की गतिविधियां का आयोजन वैकल्पिक होगा।
- किसी भी गतिविधि की विस्तृत जानकारी के लिए क्यूआर–लिंक्ड शॉर्ट वीडियो भी उपलब्ध कराया जा रहा है जहां शिक्षक/बच्चे क्यूआर को स्कैन कर उस गतिविधि से जुड़े वीडियोज भी देख सकते है।
- बैगलेस सुरक्षित शनिवार से संबंधित विस्तृत दिशानिर्देश SCERT बिहार के वेबसाईट https://scert.bihar.gov.in/ , शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के वेबसाईट https://education.bih.nic.in/ एवं e-LOTS के वेबसाईट http://bepclots.bihar.gov.in/ पर देखा जा सकता है।

बैगलेस सुरक्षित शनिवार के तहत संचालित की जानेवाली 120 गतिविधियों को 12 क्षेत्रों (Domains) के अंतर्गत विभाजित किया गया है, जिसे एक वैगन व्हील द्वारा नीचे दर्शाया गया है :–

जब हम सभी 12 क्षेत्रों पर प्रकाश डालते हैं, तो पाते हैं कि कोई भी विद्यालय प्रधान अगर सच्चे मन से इस कार्यक्रम को अपने विद्यालय में सफल बनाने में समर्थ हो पाते है, तो निश्चित तौर पर वह विद्यालय एक उत्कृष्ट विद्यालय के पथ पर चल पड़ेगा।

प्रत्येक विद्यार्थीयों के जीवन पर विशेष तौर से इन्हीं 12 चिह्नित क्षेत्रों से संबंधित विकास का उम्मीद उसके माता–पिता एवं राष्ट्र चाहता है। विद्यार्थियों में ''करके सीखो'' (Learning by doing) की प्रवृत्ति का उत्तरोत्तर

विकास होगा। 12क्षेत्रों में से दो क्षेत्रों क्रमशः '' मैं हूँ अनुसंधानकर्त्ता'' एवं ''मैं हूँ देशभक्त/अभिनयकर्त्ता '' को उदाहरण के तौर पर रखना चाहूँगा, जो इस प्रकार हैः–

क्षेत्र (Domain)– '' मैं हूँ देशभक्त/अभिनयकर्त्ता''		
क्रम संख्या	**गतिविधि का नाम**	**गतिविधि का विवरण**
1.	विभिन्न प्रार्थना गीत various prayer song	शिक्षक विभिन्न प्रार्थना गीत से बच्चों का परिचय कराएँगे। यह प्रार्थना गीत हिंदी के अतिरिक्त बिहार के विभिन्न भाषाओं और बोलियों की हो सकती है। इस प्रकार के प्रार्थना गीतों का संग्रह कर प्रतिदिन विद्यालय कार्य का आरम्भ इन गीतों के माध्यम से किया जा सकेगा।
2.	विविध वीरता पुरस्कारों/सम्मान पर चर्चा Discussion on various gallentry Awards	शिक्षक बच्चों से वीरता पुरस्कारों एवं सम्मानों के संबंध में चर्चा करेंगे। देश की रक्षा में अपने प्राणों की बाजी लगाने वाले वीरों की वीर गाथाओं को बच्चों को सुनायेंगे।
3.	लोक गीत, क्षेत्रीय गीत, देशभक्ति गीत Folk song, Regional song, Patriotic song.	लोकगीत– अपने क्षेत्र में गायी जाने वाले गीतों को लोकगीत कहा जाता है जो परंपरागत रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता है। यह समुदाय एवं भाषा विशेष होता है। देशभक्ति गीत– ऐसे गीत जो राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत हो उसे देशभक्ति गीत कहते हैं। शिक्षक छात्र–छात्राओं को अपनी दादी–नानी, माँ, पिता आदि से विभिन्न पर्व–त्योहारों और उत्सवों में गाये जाने वाले गीतों को सुनने, सीखने और गाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। लोक गीतों एवं क्षेत्रीय देशभक्ति गीतों को पहचानना एवं संग्रहित किया जा सकता है।
4.	रोल प्ले Role Play	जब छात्र–छात्रा किसी खास चरित्र की भूमिका उसके व्यवहारों के साथ निभाते हैं तो इस प्रकार की गतिविधि को रोल–प्ले कहा जाता है। शिक्षक को बच्चों से जीवन के विभिन्न छोटे–छोटे परिस्थितियों, विभिन्न विषयों पर रोल–प्ले करवाना चाहिए जिससे सीखने की इस प्रक्रिया में छात्र–छात्रा सक्रिय रूप से शामिल हो सकेंगे।
5.	नृत्य Dance	लय और ताल के साथ किया जाने वाला सौन्दर्यपरक अंग संचालन नृत्य है। शिक्षक बच्चों को भारत के विविध शास्त्रीय, लोक नृत्यों से परिचय करवा सकते हैं और बच्चों को विभिन्न नृत्यों को सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
6.	माइम(मूक अभिनय) Mime(Silent Acting)	मूक अभिनय में बिना शब्दों का प्रयोग किये शारीरिक अंग संचालन और हावभाव के माध्यम से अभिनय किया जाता है। प्रायः इसकी प्रस्तुति में कलाकार के चेहरे को सफेद रंग से रंग

		दिया जाता है। अपने वर्ग कक्ष में अनेक विषयों को बिना बोले समझाने के लिए इसका प्रयोग शिक्षक कर सकते हैं।
7.	नुक्कड़–नाटक Street show	किसी भी ऐसे स्थान पर नाटक की प्रस्तुति जो पहले से निर्धारित न हो और जहाँ अपने दिनचर्या हेतु गए व्यक्ति ही दर्शक रूप में शामिल हो जाते हैं। ऐसी नाट्य प्रस्तुति को नुक्कड़ नाटक कहा जाता है। प्रायः यह अनेक सामाजिक और जागरूकता से जुड़े विषयों पर किया जाता है। शिक्षक विभिन्न दिवस/समारोह पर इन विषयों को आधार बनाकर बच्चों को नुक्कड़ नाटक करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
8.	प्रहसन, एंकरिंग Skit, Anchoring	प्रहसन– नाटक का वह विधा है जिसमें हास्य और व्यंग का प्रयोग किया जाता है। शिक्षक अनेक विषयों को लेकर इसे प्रस्तुत करवा सकते है। एंकरिंग– यह मंच संचालन की कला है जिसमें मंच पर प्रस्तुत होने वाली सभी प्रस्तुतियों को एंकर उसी तरह एक साथ गूंथता है जैसे मानी अनेक फूलों को एक धागे में गूँथ कर माला बनाते है। शिक्षक बच्चों को एंकरिंग के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
9.	लोक नृत्य Folk dance	सामान्य लोकजीवन, प्रचलित विश्वास, आस्था और परम्परा से जो नृत्य पैदा होता है उसे लोक नृत्य कहते हैं। शिक्षक बच्चों को विभिन्न पर्व–त्योहारों, उत्सवों में गाँव–घर और समुदायों मे पैदा होने वाले नृत्यों को सीखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं जिनकी प्रस्तुति विद्यालय के विविध आयोजनों में किया जा सकता है।
10.	वाद्ययंत्र बजाना Playing Instrument	संगीत में गीत गाने के साथ कुछ न कुछ बजाया जाता है। उसे ही वाद्ययंत्र कहते हैं। शिक्षक बच्चों को अपने गाँव–समुदाय में होने वाले संगीत कार्यक्रम का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे और उसमें बजने वाले वाद्ययंत्रों का निर्माण कहाँ और किस प्रकार होता है। इसपर परियोजना करने के साथ ही यथा संभव वाद्ययंत्रों का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

क्षेत्र (Domain)- " मैं हूँ अनुसंधानकर्त्ता "		
क्रम संख्या	**गतिविधि का नाम**	**गतिविधि का विवरण**
1.	गणित मेला Mathematics fair	गणित के प्रति रूचि बढ़ाने एवं उसे आसान बनाने के लिए विद्यालय में गणित मेला का आयोजन करवाना जिसमें गणित से संबंधित सभी प्रकार की आकृतियाँ, संख्या, मापतौल को प्रदर्शित करने वाली चार्ट एवं वस्तुओं का प्रदर्शन के साथ ही सरल गतिविधियों पर आधारित गणितीय खेल का आयोजन किया जा सकता है।

2.	आसपास के स्कूलों, अस्पतालों, फैक्ट्री, डाकघरों, बैंक, पंचायत भवन, नर्सरी आदि का भ्रमण Visit to nearby schools, hospitals, factories, post offices, banks, panchayat buildings, nurseries etc.	बच्चों का समूह बनाकर इन स्थानों पर शैक्षिक भ्रमण करवाया जा सकता है जिससे बच्चों में इन स्थानों के महत्व, उपयोगिता तथा वहाँ के कार्यशैली की समझ विकसित हो सके।
3.	स्थानीय महत्व रखने वाले सांस्कृतिक स्थानों का भ्रमण Visiting place of local importance	विद्यालय के आसपास स्थानीय सांस्कृतिक महत्व रखने वाले ऐतिहासिक, पुरातात्विक अथवा शैक्षणिक उपयोगिता से संबंधित स्थानों पर ग्रुप बनाकर शैक्षणिक भ्रमण करवाएं।जिससे अपने स्थानीये महत्व रखने वाले सांस्कृतिक स्थानों को जानने–समझने एवं संरक्षित करने की समझ विकसित हो।
4.	पड़ोस के कामगारों(कुम्हार, लोहार, बुनकर, आदि) के पास भ्रमण एवं परस्पर संवाद Visiting and interaction with local neighbourhood (potter, blacksmith, and weavers etc.)	बच्चों का समूह बनाकर आसपास के कुम्हार, लोहार, बुनकर इत्यादि के पास शैक्षणिक भ्रमण करवाया जा सकता है जिससे बच्चों में उनके काम करने के तरीकों के प्रति समझ एवं उनके काम के प्रति सम्मान का भाव विकसित हो।
5.	विज्ञान मेला Science Fair	विद्यालय में विज्ञान मेले का आयोजन करवाएं जिसमें बच्चे विज्ञान से संबंधित वस्तुओं, चित्र, चार्ट, मॉडल आदि का प्रदर्शन करेंगे तथा आसान प्रयोगों को कर के दिखाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
6.	वैज्ञानिकों पर प्रोजेक्ट कार्य Project-Work on Scientists	बच्चों से प्रसिद्ध वैज्ञानिक के चित्र एकत्र करवाएं। वैज्ञानिकों की जीवनी एवं उनकी उपलब्धियों के बारे में प्रोजेक्ट बनवाये तथा रोल प्ले करने की गतिविधि भी करवा सकते है।
7.	Inspire Award से संबंधित प्रोजेक्ट निर्माण Project formation in line with inspire awards.	अवार्ड मानक योजना के बारे में विस्तृत जानकारी दें यह बताएं कि भारत सरकार के विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग की तरफ से 10 हजार तक की राशि दी जाती है, छठी से दसवीं तक के विद्यार्थि प्रत्येक विद्यालय से कम से कम 5 विद्यार्थि को ऑनलाइन आवेदन की अनुमति होती है। जिससे बाल वैज्ञानिकों की संख्या में वृद्धि होगी तथा बच्चे नए–नए वैज्ञानिक खोजों एवं तकनीकों में निपुण होंगे।
8.	विज्ञान/अनुसंधान से संबंधित फिल्म का प्रदर्शन Film screening on the topic of Science/Research	विज्ञान अनुसंधान से संबंधित फिल्म को दिखाएं। बच्चों में विज्ञान एवं तकनीकी के प्रति रूचि तथा नए विचारों के प्रति उत्सुकता जागृत होगी।
9.	खेल–खेल में विज्ञान से संबंधित गतिविधियां Play based Science activities	विद्यालय में विज्ञान विषय आधारित खेल गतिविधियां करवाई जाए। खेल खेल में बच्चे विज्ञान की अवधारणा की समझ विकसित कर सकेंगे एवं विषय के प्रति रूचि जागृत होगी।
10.	विज्ञान प्रश्नोत्तरी	विज्ञान विषय से संबंधित प्रश्नों का चयन, संकलन, निर्माण तथा

	Science quiz	क्विज का आयोजन करवाया जा सकता है।

उदाहरण के तौर पर यहाँ हम बैगलेस डे से संबंधित राज्य के प्रारंभिक विद्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों की एक झलक प्रस्तुत कर रहे हैं, जो इस प्रकार हैः–

पोषण वाटिका की एक झलक

विज्ञान मेला की एक झलक

सह शैक्षणिक गतिविधि की एक झलक

मीना मंच की एक झलक

स्वास्थ्य जागरूकता की एक झलक

अभिभावक शिक्षक गोष्ठी की एक झलक

अभिभावक संगोष्ठी की एक झलक

योगा करते बच्चे की एक झलक

खेलते बच्चे की एक झलक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के 4.26 पाराग्राफ में बस्ता–रहित दिन (Bagless Day) की चर्चा की गई है, जिसके अनुसार, प्रत्येक विधार्थी ग्रेड 6 और 8 के दौरान राज्यों और स्थानीय समुदायों द्वारा तय किए गए और स्थानीय कुशल आवश्यकताओं द्वारा मैपिंग के अनुसार एक आनंददायी कोर्स करेगा, जो कि महत्वपूर्ण व्यावसायिक शिल्प, जैसे कि बढ़ईगीरी, बिजली का काम, धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तनों के निर्माण, आदि का एक जायजा देगा और अपने हाथों से काम करने का अनुभव प्रदान करेगा। ग्रेड 6.8 के लिए एक अभ्यास–आधारित पाठ्यक्रम को एनसीएफएसई 2020–21 को तैयार करते हुए एनसीईआरटी द्वारा उचित रूप से डिजाइन किया जाएगा। कक्षा 6 से 8 में पढ़ने के दौरान सभी विधार्थी एक दस दिन के बस्ता–रहित पीरियड में भाग लेंगे जब वे स्थानीय व्यावसायिक विशेषज्ञों, जैसे बढ़ई, माली, कुम्हार, कलाकार आदि के साथ प्रशिक्षु के रूप में काम करेंगे। इसी तर्ज पर कक्षा 6 से 12 तक, छुट्टियों के दौरान भी, विभिन्न व्यावसायिक विषय समझने के लिए अवसर उपलब्ध कराये जा सकते हैं। ऑनलाइन माध्यम में भी व्यावसायिक कोर्स उपलब्ध कराये जा सकते हैं। वर्ष भर में ऐसे बस्ता–रहित दिनों को विभिन्न प्रकार की समृद्ध करने वाली कला, क्विज, खेल और व्यावसायिक हस्तकलाओं को प्रोत्साहन दिया जायेगा। बच्चों को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पर्यटक महत्व के स्थानों/स्मारकों का दौरा करने, स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों से मिलने और अपने गांव/तहसील/जिला/राज्य में उच्चतर शैक्षाणिक संस्थानों को दौरा करने के माध्यम से स्कूल के बाहर की गतिविधियों के लिए आवधिक एक्सपोज़र दिया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का विजन भी बैगलेस डे की प्रासंगिकता पर बल देता है कि अगर कोई भी विद्यालय प्रधान इस कार्यक्रम को सफल बनाएंगे तो निश्चित ही उस विद्यालय के वातावरण में आमूल चूल परिवर्त्तन दृष्टिगोचर होगा। इस राष्ट्रीय शिक्षा का विजन भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्चतर गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराके और भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवंत और न्यायसंगत ज्ञान समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी। नीति में परिकल्पित है कि हमारे संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षाविधि छात्रों में अपने मौलिक दायित्वों और संवैधानिक मूल्यों, देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न करे। नीति का विजन छात्रों में भारतीय होन का गर्व न केवल विचार में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में भी और साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए जो मानवाधिकारों, स्थायी विकास और जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो, ताकि वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सकें।

निश्चित तौर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बैगलेस डे की अवधारणा पर विशेष बल दिया गया है, जिससे कि आनेवाली पीढ़ियाँ अपने–आप को स्वावलम्बी बनाने में समर्थ हो सके और भारत सरकार के '' मेक इन इण्डिया'' कार्यक्रम को गाँव–गाँव तक पहुँचाने में कामयाबी मिल सके। इस कार्यक्रम से विद्यार्थियों में विद्यालयों के प्रति आकर्षण बढ़ेगा और हर छोटी–मोटी चुनौतियाँ स्वतः कम हो जाएगी। विद्यालय का वातावरण समावेशी, स्वच्छ एवं पारदर्शी होगा, जहाँ सबको सम्मान मिलेगा और बच्चों में देश के प्रति एक अलग तरह का समर्पण का भाव होगा। इस प्रकार बैगलेस डे कार्यक्रम की मुख्य धुरी विद्यालय प्रधान ही हैं, जिसके चारों ओर विद्यालय की हरेक गतिविधियाँ घूमते रहती है।

निष्कर्षः

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्त्व केन्द्र (NCSL) के विजन – ''विद्यालय के रूपांतरण के लिए नेतृत्त्व की नई पीढ़ी तैयार करें ताकि हर बच्चा सीखे और हर विद्यालय उत्कृष्ट हो'' तथा मिशन– ''गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालय स्तर पर संस्थानिक विकास हेतु नेतृत्त्व क्षमता को समृद्ध बनाएँ'' दोनों को सफलीभूत बनाने में बैगलेस डे कार्यक्रम मील का पत्थर साबित होगा। इसकी भूमिका विद्यालय विकास में अग्रणी होगी एवं इसके केन्द्र–बिन्दु में विद्यालय प्रधान होंगे।

इसलिए आइए, हमसब मिलकर बैगलेस डे कार्यक्रम को सफल बनाएँ, ताकि प्रत्येक विद्यालय एक उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में स्थापित हो सके।

संदर्भः–

https://scert.bihar.gov.in

http://education.bih.nic.in

http://bepclots.bihar.gov.in

http://niepa.ac.in

http://ncert.nic.in